

पद २६०

(राग: काफी – ताल: दीपचंदी)

आज शाम बन्सी हो बजाई ॥ध्रु.॥ सुन ब्रज नागर नट की । शेष
प्रेम भयो सोसन झटकी । धरती जब जाधर लटकी । ऐसी प्रेम
छाई ॥१॥ जमुना तीर हार बाज बन बन्सी की धून सबद बराय
घन । मानिक के प्रभु भक्तनके प्रान चरनन ध्यान लगाई ॥२॥